Navchetana Homilies

JUNE 9, 2019

Ex 19:1-9

Act 2:1-13

1 Cor 12:1-11

Jn 16:5-15

पेन्तेकोस्त

पेंतेकोस्त ही एक ऐसा पर्व है जिसे हम कह सकते हैं 'हमारा अपना पर्व'। बाकि सब पर्व में दूसरों के जीवन में क्या हुआ उसकी याद करते हैं, जैसे प्रभु येसु का जन्म, रूपान्तरीकरण, मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, या माता मरियम या संतों के जीवन आदि। पेंतेकोस्त में हम स्मरण करते हैं हमारे साथ क्या हुआ, क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए। यह पवित्र आत्मा का पर्व है। बपतिस्ता और दृढ़ीकरण संस्कारों में हम पवित्रात्मा से अभिषिक्त हुए, पवित्रात्मा ही हमें येसु के वचनों पर ले जाता है और पवित्रात्मा हमें जो राह दिखाता है उसी पर हमें चलना है।

पेंतेकोस्त का अर्थ है पचासवाँ दिन। यह प्रभु के पुनरूत्थान के बाद का पचासवाँ दिन है।

उत्पत्ती ग्रंथ के प्रारंभ में हम पढ़ते हैं – "पृथ्वी उजाड़ और सुनसान थी। अथाह गर्त पर अन्धकार छाया हुआ था और

ईश्वर का आत्मा सागर पर विचरता था।" उसी ईश्वर का आत्मा से सृष्टि का प्रारंभ हुआ। वही आत्मा पेंतेकोस्त के दिन एक नई सृष्टि का प्रारंभ करता हैं – मनुष्य को ईश्वर अपनी आत्मा से एक नवीन मानव बना देते हैं।

पवित्रात्मा के आगमन के बारे में प्रेरित चरित का विवरण हमने सुना – "अचानक आंधी जैसी आवाज़ आकाश से सुनाई पड़ी और सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज उठा। उन्हें एक प्रकार की आग दिखाई पड़ी, जो जीभों में विभाजित होकर उनमें, हर एक के ऊपर आकर ठहर गयी। वे सब पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो गये।"

अब तक भय से छिपे बैठे, येसु के शिष्य पवित्रात्मा से शक्ति पाकर, निडर होकर जनता के सामने भाषण देने लगे। सुनने वालों में बहुत सारे देशों से आये हुए लोग थे, विभिन्न भाषा बोलने वाले। वे सब अचंभे में पड़ गये और एक दूसरे से पूछने लगे – "क्या ये बोलने वाले सब के सब गलीली होते हुए भी हम में हर एक अपनी जन्मभूमि की भाषा में कैसे सुन रहे हैं।"

उसी दिन पेत्रुस का भाषण सुनकर तीन हजार से ज्यादा लोग प्रभु येसु के अनुयायी बनें। उनसे पेत्रुस ने कहा – "आप पवित्रात्मा का वरदान प्राप्त करेंगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा आपके तथा आपकी संतान के लिए है, जो अभी दूर है और जिन्हें प्रभु येसु बुलाने वाला है।"

प्रभु येसु ने पवित्रात्मा को भेजने की प्रतिज्ञा की थी – "जब वह सहायक, वह सत्य का आत्मा आयेगा, जिसे मैं पिता के यहाँ से तुम लोगों के पास भेजूँगा, तो वह मेरे विषय में साक्ष्य देगा, और तुम लोग भी साक्ष्य दोगे।" (योहन 15:26–27) हमने भी पवित्रात्मा को ग्रहण किया है, लेकिन अकसर हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते।

मेडिटेशन करना, ध्यान करना सिखाते समय एकाग्र होने के लिए तीन अभ्यास दिये जाते हैं।

हम सदा श्वास लेते हैं। लेकिन श्वास लेने की क्रिया के बारे में कहाँ सोचते हैं। इसलिए एकाग्रता लाने के लिए कहते हैं – अपनी श्वास–उछास पर ध्यान दो। शांत बैठकर आँखें बंद करके श्वास लो, यदि वह तेज गती से है तो धीरे करो, यदी वह ऊपरी तौर पर है तो गहरी सांस लो।

हम हमेशा कुछ न कुछ सुनते रहते हैं। हमारी सुनने की क्रिया बंद नहीं होती। अभी आप लोग मुझे सुन रहे हैं। शांत बैठकर, आँखें बंद करके बाकी जो भी आवाज़ चारों ओर से आ रही है उनपर ध्यान दे। ऊँची आवाज़ों को छोड़कर बहुत ही धीमी आवाज़ों पर ध्यान दे। एकाग्र हो जाये।

तीसरा अभ्यास है हमारे शरीर के बारे में – शरीर के अंगों के बारे में। हमारे शरीर के अंग भी सदा कार्यरत हैं, लेकिन हमारा ध्यान उनपर कहाँ जाता है। एकाग्र होने के लिए अभ्यास है शरीर के एक–एक अंग पर ध्यान देना। शांत

बैठकर सिर के बाल से लेकर पावों के अंगूठे तक हर एक अंग में ध्यान देना।

एकाग्र हुए बिना पवित्रात्मा और उसके वरदानों के बारे में हमें ज्ञान नहीं होगा।

एक बार मैंने Catechism क्लास के बच्चों से पूछा कि आप लोग पवित्र आत्मा के बारे में क्या जानते हैं? बच्चों ने तुरन्त आँधी–तूफान की आवाज़, कबूतर और आग के रूप में पवित्रात्मा का उतरना, पेत्रुस का भाषण इन सब के बारे में बताया। फिर मैंने पूछा – "क्या आप लोगों ने अपने अंतर या दूसरों के अंतर पवित्रात्मा जो कार्य करता है उस पर कभी ध्यान दिया? सारे बच्चे मौन रहे, किसी ने कुछ नहीं बोला। मैंने प्रश्न को थोड़ा बदलकर पूछा – "क्या आप लोगों ने, आपके माता–पिता ने येसु के वचनों के अनुसार सचमुच कोई भला कार्य किया है, या कर सकते है।" हाजिर जवाब वाले बच्चे थोड़ा गंभीर हो गये, संकोच करने लगा। मैंने कहा आँखे बंद करके अपने आपसे पूछों। धीरे–धीरे जवाब आने लगे।

आज पेंतेकोस्त है। हमारे सहायक, ईश्वर का आत्मा हमारे अंतर है। वह हमें प्रेरणा देते हैं। वह हमारे अंतर सत्य की, प्रेम की, ईश्वर की इच्छा पर चलने की आग जलाते हैं। उसको हम अनुभव करें। मौन रूप से पवित्रात्मा से प्रार्थना

करें – वह हमारे अंतर आग बनकर रहे और हम उनके वरदानों को प्राप्त करें।

Dr. James ML CMI